तारतम विचार

(प्रकाश)

श्री बाल कृष्ण प्रणामी, गुडगांव

(आदरणीय गिरधर जी, सप्रेम प्रणाम। अत्र कुशलम तत्रास्तु। कानपुर में जब हम मिले, आप ने प्रेरणा दी कुछ 'धाम दर्शन' में लेख लिखने की। बहुत विचार किया कि क्या लिखा जाए। धर्म के विषय पर लेख, कविताएँ आदि हर पत्रिका में छपती हैं। वाणी की चौपाई भी छपती है। कोई नई चीज लाई जाए। फिर बानी से दूर कैसे भाग सकते हैं। बानी का अर्थ ही लिया जाय परन्तु क्रमानुसार एक-एक चौपाई का अर्थ लेना भी कठिन एक लम्बा प्रोजेक्ट है। पर श्री राज की अन्तः प्रेरणा हुई कि प्रकरण अनुसार प्रेसी, भावार्थ, सारांश रूप में बानी को गद्य रूप में लिखा जाए। सुन्दर साथ को इस से भी आनन्द आएगा।

सबसे पहले मैंने प्रकाश किताब से आरम्भ किया है। अभी केवल आठ प्रकरण लिखे हैं। इस के बाद क्रमशः हर अंक में चलता रहेगा और प्रयत्न करूंगा कि पूरा स्वरूप साहब कवर हो जाये आगे धनी की इच्छा और आप जैसा उचित समझें। पहला प्रयास इस पत्र के साथ संलग्न कर रहा हूँ। श्री सलूजा साहब एवं सर्व सुन्दर साथ को प्रणाम। —लेखक)

बृज और रास के बाद भी रुहों की उमीदें पूरी न हुईं। तब ये तीसरा खेल रचा गया। अब श्री इन्द्रावती साथ के पाऊं पड़कर चेतना कर रही है कि जाग जाओ। इस सुपने में भी सुन्दरबाई धनी का आवेश लेकर हमारे साथ ही है। दुःख की माया तो दिखाई जी हम ने हौंस की। अपने आधार तारतम विचार का उजाला ले कर आये हैं। धनी के अपार गुणों को नहीं पहचानेगे तो हम बड़े गुन्हेगार होंगे। अभी माया से तृप्त नहीं हुए। इस को मन से उतार दो। धनी अपने को माया में मिले हैं ये अवसर क्यों भूलें। ये छल तुम्हें नहीं छोड़ता और धनी तुम्हें नहीं छोड़ेंगे। पचीस पक्ष धाम के लीजो। माया कितने छल करे तो भी धनी के चरण न छोड़ो।

साथ में सिरदार सुन्दरबाई श्यामा जी अवतार श्री देवचन्द्र जी को धनी ने पूरन आवेश दिया। हमें पचीस पक्ष धाम के बताये। माया की बेसुधी ऐसी आई कि मूल सगाई को न पहचाना। भूण्डी बुद्ध ने अखण्ड घर की सुध न की। निपट झूठा प्रीत इतना निठोर हो गया कि जगत की झूठी प्रीति को न तोड़ सका।

Nijanand App

ये तो बड़ा कहेर हो गया। पांच वर्ष का बाल भी कछुक सम्भाल करता है। हमारा क्या धरम रहा। श्री देवचन्द्र जी ने शरीर छोड़ दिया। अपने पिऊ को न पहचान सकी। विछोहा अब नहीं सहा जाता, ये सुन के कानों को आग क्यों न लगी। आंखों में लहु क्यों न आया। लौकिक पिऊ भी जिस के बिछड़ते हैं वे भी रो-रो के पागल हो जाती है। गुण अंग इन्द्री सब को धिक्कार है। ये जोत अब पकड़ी नहीं रहेगी। इस ने सुन निराकार को फोड़ कर आगे ब्रह्मानन्द ब्रह्मसृष्टि बिलास को जाहिर किया। ये अखण्ड सुख पहले पिऊ की बिरहिनयां लेंगी। पीछे ये सुख सब को मिलेगा। नेहचल निध से अभी बुद्ध असुद्ध है। साहब के चलते अपने अंग इन्द्री ही दुष्मन हो गये। सज्जन न बने। सुख सागर के जाते कायर होकर अवसर गवा दिया। चण्डाल जीव स्वामी द्रोही बन गया। जीवड़ा निपट, दुष्ट, ढीठ, अधरमी एवं विमुख होकर समय गवा दिया। त्रैगुन त्रलोकी माया में हम घर रचा कर बैठे हैं। अखण्ड बृज रास का बेवरा दूध पानी का निवेरा, मेष बागे का, १०८ पक्ष का बेवरा, अक्षरातीत के मुख बिना आधार कौन कहेगा। ताल, पाल, मंदिर, मोहलन के सुख कौन देगा। गुण, अंग, इन्द्री जो उलटे दुष्मन बने थे उनको सज्जन कौन करेगा। श्याम श्यामा से कौन मिलायेगा। नेहचल द्वार कौन खोलेगा। धनी ने मुझ कारण धन दिया वे नींद में खो दिया।

साहब आये वचन पुकारे, पर मैं पहचान न कर सकी। ये गहरा दुःख रूपी मोह जल है। इसमें एक सायत का भी सुख नहीं। ऐसे विषम जल में पिऊ आये। माया अमल इतना जोर का था कि मैं अंग न मरोर सकी। आप आए पर मिलाप न कर सकी। पिऊ पास न देख कर सब आस टूट गई। मेरे वास्ते धनी माया में डारया, पर मैं नींद में उरझी रही। साहब तो बोल-बोल गये, हम ही आंखे न खोल सके। कितने बैन कहे, पर नैन न खुले। अपनी बीतक बात कह गये। अब मछली न्यात तड़प रही हूँ। वतन के वचन कहे फिर भी आंख मूंदी रही। धनी के सनमुख हो कर भी सीधी बात नहीं की। यही दुःख मार रहा है। इस मीठे दरद में भी बड़ा सुख है, अब इसको नहीं छोड़ सकती। प्रकरण १ से ८ (क्रमशः)

Nijanand App